Journal *de* Brahmavart
Volume one ,Issue one
ISSN 2394- 6326

Quarterly Published by
Brahmavart Research Institute
7A/1 Aman Patel Complex
Vishnupuri Kanpur U.P. India

# कानपुर का सं{kिप्त एतिहा□सक परिचय

**डॉ. पुरुषोत्तम □संह**

**अ□सस्टेंट प्रोफेसर इतिहास**

**वी.एस.एस.डी. कॉलेज कानपुर**

वर्तमान कानपुर संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध की इलाहाबाद की कमिश्नरी का एक महत्वपूर्ण जिला था, पूर्व दिशा में जाजमऊ से लेकर पश्चिम दिशा में नवाबगंज तक और उत्तर में गंगा से लेकर दक्षिण में जूही तक फैला है। जनपद कानपुर नगर मुख्यतः दो नदियों के बीच स्थित है। जनपद कानपुर नगर गंगा व यमुना के दोआब के निचले भाग में स्थिति है। इस जनपद की सीमाएं प्रदेश के फतेहपुर, उन्नाव, हमीरपुर, कन्नौज तथा कानपुर देहात जनपदों से मिली हुयी है; इस जनपद के पूर्व में फतेहपुर, उत्तर में उन्नाव, पश्चिम व दक्षिण में कन्नौज, हमीरपुर तथा कानपुर देहात जनपद स्थित हैं। जनपद की उत्तरी सीमा गंगा नदी द्वारा निर्धारित होती है।

जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 3005 ox fd0eh0 gA जनपद 25&26$^0$ प 26&58$^0$ उत्तरी अक्षांश और 79&31$^0$ o 80&34$^0$ पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित है। कानपुर नगर की समुद्र तल से ऊँचाई 126&048$^0$ मीटर है। जनपद की औसत वर्षा 802 feyh ehVj प्रतिवर्ष है। जनपद की भूमि दोआब के समान दोमट है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार कानपुर नगर की जनसंख्या 41]37]489 है, जिसमें 2213955 i#"k तथा जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में 1600868 व्यक्ति तथा 1923534 महिलाएं है। शहरी क्षेत्र में 25]36]621 व्यक्ति निवास करते हैं, जनसंख्या के आंकड़ों के आधार पर 221 i#"k ij 192 efgyk; gA जनसंख्या का घनत्व (प्रति वर्ग कि0मी0) 1377 है, जनपद में 28]00]304 व्यक्ति साक्षर है अर्थात् साक्षरता का प्रतिशत 67-7 है। खास कानपुर जिले में 6 (छः) नदियां है– xxk] blu] ikM] fjUn] lxj vkj ukuA ईसन पांडू और नोन गंगा नदी में ही गिरती है, नोन नाम की एक दूसरी नदी भी है, जो कानपुर जिले के घाटमपुर, अकबरपुर तहसीलों में बहती है। इन तहसीलों से बहती हुयी, ये नदी फतेहपुर जिले में चली जाती है। इस भूमि की बनावट नदियों से प्रभावित होने के कारण मुख्य रूप में मिट्टी लोमवर्ग की है, जो काफी मात्रा में उपजाऊ है, ये मुख्यतः– जनपद के सम्पूर्ण भागों में पायी जाती है।

19 oh0 'krkCnh e: dkuiqj dk lhekdu- गंगा तथा पांडू नदी के तलहटी के कुछ हिस्सों में बलुअर दोमट मिट्टी है। कहीं–कहीं पर ऊसर भी दृष्टिगोचर होता है, कुछ भाग को छोड़कर समस्त जनपद की उपजाऊ एवं चौरस है। जनपद देश के अन्य भागों से रेल तथा सड़क मार्गो से जुड़ा हुआ है। कानपुर नगर से उत्तर रेलवे, मध्य रेलवे तथा उत्तरपूर्वी रेलवे तीनों प्रकार के मार्ग जाते है। पेशावर कोलकाता जाने वाली xkM Vªd jkM भी कानपुर नगर के मध्य भाग से विकास खण्ड कल्यानपुर व सरसौल से होती हुयी जाती है। जनपद में इण्डियन एयर लाइन्स का हवाई–अड्डा भी है, जहाँ से विमान सेवाएं उपलब्ध रहा करती थी, किन्तु वर्तमान में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। जनपद के राष्ट्रीय राजमार्ग पर (रनियां से सरसौल) फोर लेन सड़क का निर्माण कार्य प्रगति पर है। सन् 1773 में जाजमऊ की संधि के पश्चात् कानपुर का अंग्रेजों से सर्वप्रथम स्थापित हुआ। अवध के शासन काल में ही यहाँ व्यापार का प्रसार हो चला था, अवध के नवाब की ओर से नियुक्त सूबेदार अल्मास अली खाँ का सदर मुकाम यद्यपि 'कोड़ा' था परन्तु वह प्रायः कानपुर आकर महीनों यहाँ मुकाम करता था, सन् 1773 ई0 से 1801 तक अल्मास अली के शासन में ही कानपुर रूपी नवजात शिशु का पालन पोषण हुआ, सन् 1778 में अंग्रेजी छावनी बिलग्राम के पास फैजपुर ^dEi* नामक स्थान से हटकर कानपुर आ गयी। सन् 1801 में अवध और ईस्टइण्डिया कम्पनी के मध्य हुयी संधि के अनुसार गंगा–यमुना के दोआबे के नीचे का भाग अंग्रेजों के शासन में आया 18 ekp 1802 dk fe0 oyukM dkuiqj d iFke dyDVj fu;qDr gq,A 24 ekp 1803 bZ0 dk dkuiqj dk ftyk ?kksf"kr fd;k x;kA उस समय कानपुर जिले में 15 ijxu Fk& जाजमऊ, बिठुर, शिवराजपुर, बिल्हौर, रसूलाबाद, डेरापुर, सिकन्दरा, भोगनीपुर, अकबरपुर, घाटमपुर, औरैया, कन्नौज कोड़ा, अमौली व सलेमपुर। प्रत्येक परगने का शासक एक तहसीलदार होता था। जिले के शासक काल एक अंग्रेज अफसर होता था जिले कलेक्टर, मजिस्ट्रेट तथा जज तीनों पदों के अधिकार प्राप्त था। सन् 1827 में जज व मजिस्ट्रेट के पद भी विभक्त है। सन् 1801 से 1812 तक सदर कचेहरी और दफ्तर छावनी में ही स्थित थे, सन् 1833 में कानपुर की पहली बार इलाहाबाद से दिल्ली तक निर्माण हुआ, सन् 1853 में कानपुर की पहली बार जनगणना हुयी। 1857 ई0 के पहले कानपुर शहर पश्चिम में नवाबगंज तक और दक्षिण में कलक्टर गंज तक फैला था, और शहर के बचे भाग पर फौजी लोग रहा करते थे, फौजी अफसरों ने ही जनरलगंज और कर्नलगंज बसाया, बेकन कलक्टर ने सन् 1828 ई0 में बेकनगंज बसाया। सन् 1857 ई0 के बाद ही अंग्रेजों ने कानपुर के शिक्षा के क्षेत्र में कदम उठाए। सर्वप्रथम इस शहर में एग्रीकलचरल कॉलेज (कृषि कॉलेज) की स्थापना हुई, धीरे–2 विकास होता गया और प्रत्येक स्तर के शिक्षा संस्था की स्थापना लगातार होती रही। 1857 ई0 की क्रांति के बाद शहर में शांति छा गयी, उससे नगर की काया पलट गयी और नवीन व्यापारिक उन्नति इसी समय से प्रारम्भ हुई, अभी तक नदी, ग्रांड ट्रंक रोड तथा नहर के द्वारा व्यापार होता था। सन् 1859 ई0 में ईस्ट इण्डिया रेलवे कम्पनी की लाइन कानपुर आ जाने के कारण नगर की चौगुनी उन्नति शुरू हो गयी।[19]

कपड़ा उद्योग बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रहा था, कुछ लोगों ने कानपुर कॉटन कमेटी के नाम से एक संस्था सन् 1860 ई0 में स्थापित हुई, जिसकी स्थापना का श्रेय ईस्ट

---

[19] कानपुर का इतिहास– श्रीरामदेव मोरोलिया तथा श्री बालकृष्ण महेश्वरी पृष्ठ – 71

इण्डिया रेलवे के कानपुर के स्टेशन मास्टर मिस्टर cbLV को है।[20] इसी प्रकार कानपुर की आबादी बढ़ती जा रही थी, प्रत्येक क्षेत्र में कानपुर उन्नति करता जा रहा था। सन् 1901 की आबादी दस वर्श में 4 प्रति ात बढ़ी थी, उस समय अनुमानित आबादी 2,43,755 अनुमान की जाती है। जिनमें हिन्दू 1,655,08 मुसलमान 72,640 और इसाई 4965 थे, शेष में यहूदी, पारसी इत्यादि है। इस समय शहर का लिंगानुपात 1000 पुरुष पर 696 स्त्रियों की औसत है, उस समय साक्षरता अनुपात अत्यधिक निम्न स्तर पर था, चूंकि साक्षरता पर पूरी तरीके से जोर नहीं चलता था, 1000 पुरुष में 235 पढ़े–लिखे थे, जबकि महिलाओं में साक्षरता अनुपात बहुत निम्न स्तर पर था, 1000 महिलाओं पर 62 महिलाएं ही साक्षर थी[21] समय बदलते–बदलते इस अनुपात में कमी होती गयी और सर्वप्रथम कानपुर में लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया।

| tux.kuk 2011 % vfre vkdM% | | |
|---|---|---|
| 1- | भारत का कुल क्षेत्रफल (वर्ग किमी0 में) | 3,287,469 |
| 2- | उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल (वर्ग किमी0 में) | 240,928 |
| 3- | कानपुर नगर का क्षेत्रफल | 3155 (उत्तर प्रदेश के क्षे0 से 1.37 का अनुपात) |
| 4- | कानपुर की जनसंख्या<br>पुरुष<br>महिला<br>(0–6) आयु समूह ज0 | 45,81,268<br>24,59,806<br>21,21,462<br>50,99,24 |
| 5- | लिंगानुपात | 855 (2001)<br>863 (2011) |
| 6- | जनघनत्व | 1321 (2001)<br>1452 (2011) |
| 7- | दशकीय वृद्धि पर | 9.9 |
| 8- | साक्षरता दर<br>पुरुष<br>महिला | 79.7<br>83.6<br>75.1 |
| 9- | कुल जनसंख्या की अनुसूचित जाति<br>पुरुष<br>स्त्री | 8,16,754<br>4,39,603<br>3,77,157 |
| 10- | कुल जनसंख्या की अनुसूचित जनजाति<br>पुरुष<br>स्त्री | 3753<br>2108<br>1645 |
| 11- | कुल जन0 का ग्रामीण जनसंख्या से प्रति0 | 34.2% |
| 12- | कुल जन0 का नगरीय जनसंख्या से प्रति0 | 65.8% |

[20] कानपुर का इतिहास– श्रीरामदेव मोरोलिया तथा श्री बालकृष्ण महेश्वरी पृष्ठ – 72

[21] कानपुर का इतिहास– श्रीरामदेव मोरोलिया तथा श्री बालकृष्ण महेश्वरी पृष्ठ – 8

## dkuiqj esa f'k{kk dk fodkl %

पौराणिक ग्रन्थों एवं अन्य विभिन्न अधिक्रत स्त्रोतो एजूकेशन इन एंसियट इण्डिया, एंसियट इण्डियन एजूकेशन, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एजूकेशन आदि के लेखको, इण्डिन ऐजूकेशन कमीशन की रपट एवं शिक्षाविद्ों आदि से प्राप्त जानकारियों से स्पष्ट होता है कि कानपुर प्राचीनकाल से शिक्षा का जानामाना केन्द्र रहा है। हालांकि इतनी दीर्घावधि में शिक्षा के स्वरूप में समयानुसार बदलाव होता रहा है।

1801 ई0 के बाद कानपुर ब्रिटिश शासन के अधीन आया तब शिक्षा (प्रचलित) पद्धति प्रभावी हुई। जिले के बौद्धिक वर्ग में नवीन विचारों का प्रभाव पड़ा, 1813 ई0 के चार्टर अधिनियम, जिसमें भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के लिए कम्पनी को एक लाख रुपये की व्यवस्था की गई[22] तथा 1835 को पारित ^^edkyfeuV**[23] के अन्तर्गत शिक्षा के लिए ^^fuL;Un dk fl)kr** जिसके तहत अंग्रेजी शिक्षा कुछ भारतीयों को इस प्रकार दी जाये कि वे भारतीय होकर भी कम्पनी शासन के समर्थन में अपना काम करें तथा स्थानीय जनता में भी कम्पनी की नीतियों में अपना काम करें तथा स्थानीय जनता में भी कम्पनी की नीतियों को प्रचारित करके उनमें व्याप्त रोष को कम कर सकें। परिणामतया ऐसी औपनिवेशिक शिक्षा नीतियों के माध्यम से भारत में अंग्रेजी शिक्षा का व्यापक रूप से प्रसार हुआ।

इसी दौरान, पुनर्जागरण की देशव्यापी लहर के चलते सम्पूर्ण भारत में पाश्चात्य ज्ञान के प्रति लोगों के रूचि बढ़ी, जिससे उनमें भी अपने क्षेत्रों में व्याप्त बुराईयों को दूर करने की प्रेरणा मिली। कानपुर भी इस पश्चिमी विचारधारा से अछूता नहीं रह सका। फलस्वरूप, परम्परागत शिक्षण संस्थाओं की गतिविधियों के साथ–2 कानपुर में भी फ्रीस्कूल, क्राइस्ट चर्च कॉलेज, मेथॉडिस्ट स्कूल जैसी संस्थाओं की स्थापना हुई, इनके माध्यम में जहां जिले में पश्चिमी ज्ञान का प्रभाव बड़ा, वहीं इसके विरूद्ध देशीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की भी ध्वनि कुछ प्रमुख संगठनों द्वारा सुनाई पड़ी। जी0एन0 के कॉलेज (1888) तथा 20वीं शताब्दी के आरम्भिक दौर में डी0ए0वी0 कॉलेज की स्थापना को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है लेकिन फिर भी शिक्षा के प्रसार ने विकासवादी दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान की।

---

[22] मजूमदार, आर0सी0 ब्रिटिश पैरामउण्ट्सी एण्ड इण्डियन रैनेसा (भारतीय विद्या भवन, बम्बई–1965)

[23] वही अध्याय–द्वितीय पृ0–47